एमा लज़ारस की कहानी

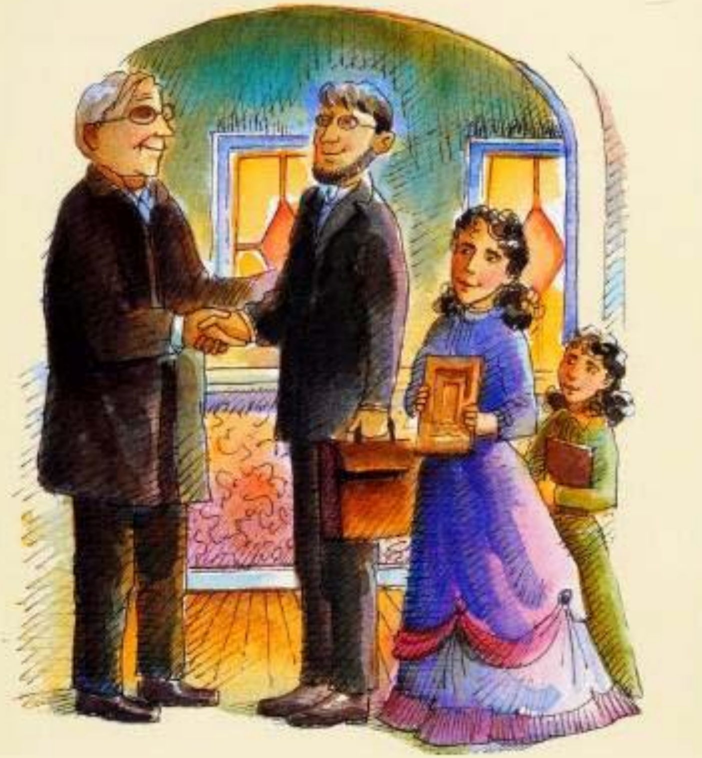
लिबर्टी की वाणी



एमा लज़ारस की कहानी

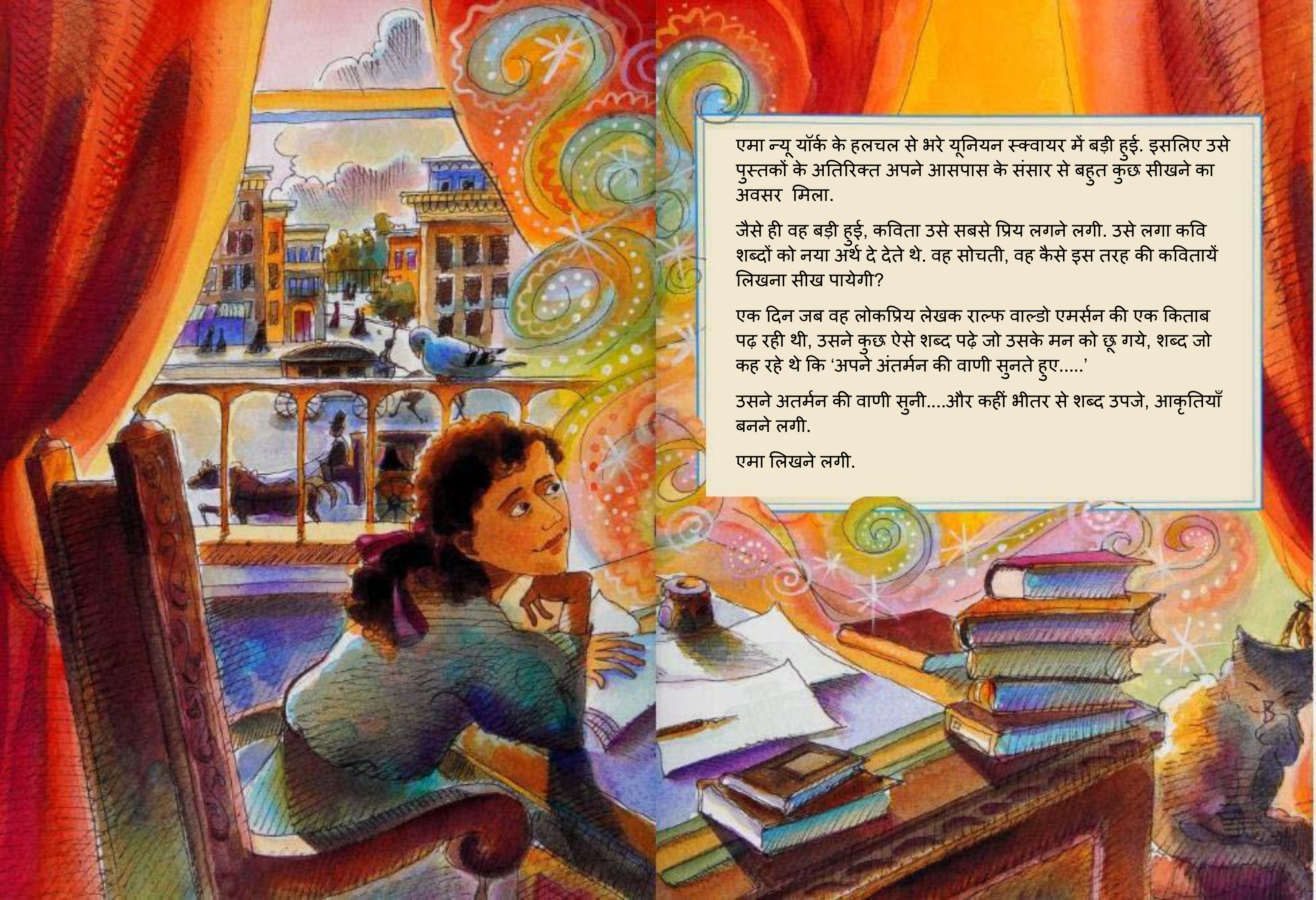
लिबर्टी की वाणी





एमा लज़ारस को सीखना अच्छा लगता था. उसमें ज्ञान के लिए भूख थी और पढ़ने की उत्कट इच्छा. इसी उत्कट इच्छा ने एक दिन उसे लिबर्टी की वाणी बनाया.

लेकिन १८४९ में, जब एमा का जन्म हुआ था, लोगों का विश्वास था कि औरतों के लिए पढ़ना सम्मानजनक कार्य न था और जो लड़कियाँ अपने दिमाग का अधिक उपयोग करती थीं वह बीमार हो जाती थीं. सौभाग्य से एमा के पिता ऐसा न सोचते थे. वह चीनी के एक संपन्न उत्पादक थे. एमा और उसके बहन-भाइयों को पढ़ाने के लिए वह अध्यापकों को घर पर ही बुलाते थे.



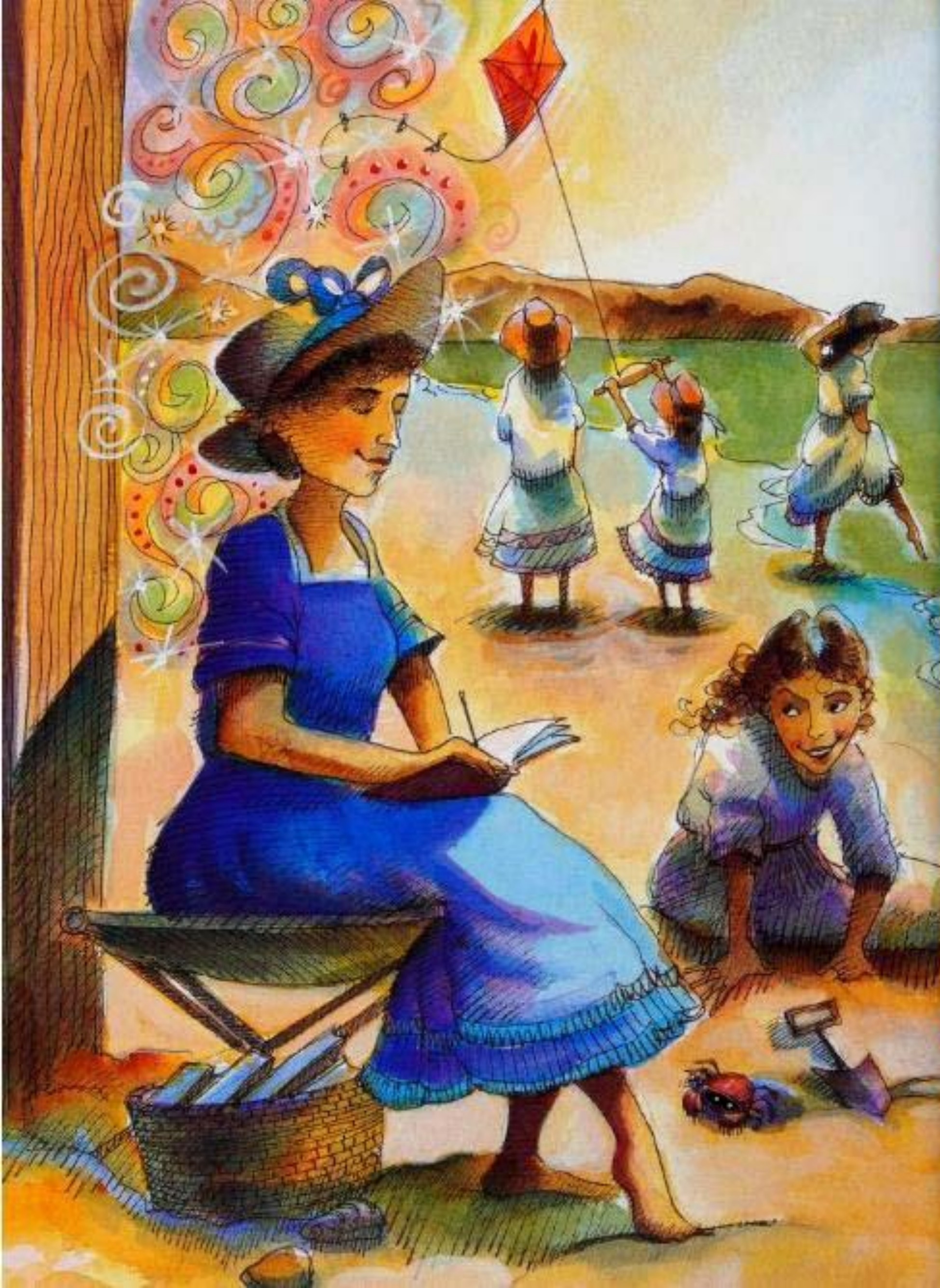
एमा न्यू यॉर्क के हलचल से भरे यूनियन स्क्वायर में बड़ी हुई. इसलिए उसे पुस्तकों के अतिरिक्त अपने आसपास के संसार से बहुत कुछ सीखने का अवसर मिला.

जैसे ही वह बड़ी हुई, कविता उसे सबसे प्रिय लगने लगी. उसे लगा कवि शब्दों को नया अर्थ दे देते थे. वह सोचती, वह कैसे इस तरह की कवितायें लिखना सीख पायेगी?

एक दिन जब वह लोकप्रिय लेखक राल्फ वाल्डो एमर्सन की एक किताब पढ़ रही थी, उसने कुछ ऐसे शब्द पढ़े जो उसके मन को छू गये, शब्द जो कह रहे थे कि ‘अपने अंतर्मन की वाणी सुनते हुए.....’

उसने अतर्मन की वाणी सुनी....और कहीं भीतर से शब्द उपजे, आकृतियाँ बनने लगी.

एमा लिखने लगी.



एमा को हर जगह लिखने की प्रेरणा मिली. कवितायें लिख-लिख कर उसने एक कापी के बाद दूसरी कापी भर दी. अपने मित्र की मृत्यु पर अपने दुःख के बारे में उसने लिखा, सिविल वॉर के एक जनरल की वीरता पर लिखा, और सुंदर यूनानी देवी एफ्रोडाइट का सागर से प्रकट होने के विषय में लिखा.

जहाँ कहीं भी वह जाती अपनी कापी साथ ले जाती. न्यूपोर्ट में स्थित परिवार के ग्रीष्मकालीन घर में भी कापी लेकर गई.

जब उसका भाई और पाँच बहनें दौड़ने और खेलने में व्यस्त होते वह कवितायेँ लिखती और उन्हें सुधारती.





जब वह सौ साल पुराने उस सिनागोग में गई जिसे स्पेन और पुर्तगाल के उन यहूदियों ने बनवाया था जो सुरक्षा और स्वतंत्रता के लिए अमरीका आये थे, वह अपनी कापी साथ लेकर गई. अपने धर्म के साथ विश्वासघात करने के बजाय, उन लोगों ने अपना घरबार छोड़ दिया था, बिना जाने कि वह कहाँ जायेंगे और किस प्रकार जीवित रहेंगे. उन्हीं लोगों में से एक एमा के पूर्वज भी थे.

उस पुराने प्रार्थना-स्थल के एक कम प्रकाशित स्थान में खड़े होकर, एमा कल्पना करने लगी कि उन लोगों ने क्या अनुभव किया होगा. उसने अपने भीतर की वाणी, एक फुसफुसाहट, सुनी. शब्द जन्म लेने लगे, आकृतियाँ दिखने लगीं.

इस मंदिर में कितनी प्रार्थनाएं थी निकलीं

उन उदास हृदयों से जो सुख से थे वंचित

वो जो हुए निर्वासित सदियों पहले

उस सुंदर धरती से जो थी उनकी जन्मभूमि!





एमा की कापी कविताओं से भर गई थी, लेकिन....क्या वह अच्छी कवितायें थीं? झिझकते हुए उसने अपने पिता को कापी दिखाई.

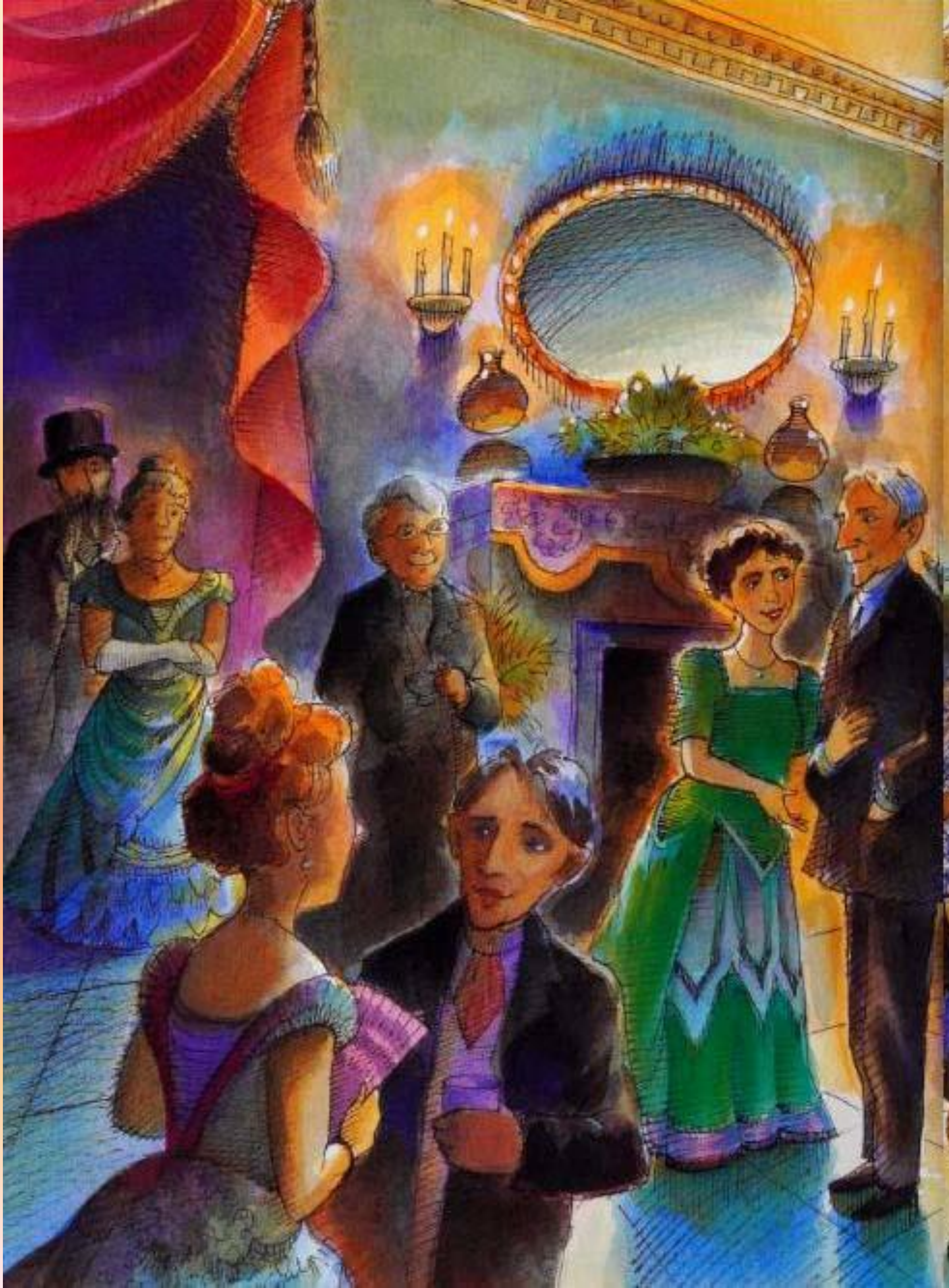
मोसेस लज़ारस प्रसन्न हुआ-उसकी बेटी में योग्यता थी. उसे प्रोत्साहित करने के लिए पिता ने एक पुस्तक में उसकी कुछ कविताएं छपवाईं. इस पुस्तक का शीर्षक था 'कविताएं और अनुवाद, चौदह और सतरह वर्ष की आयु में एमा लज़ारस द्वारा लिखित'. इस पुस्तक को उन्होंने मित्रों और संबंधियों को बांटा.

परिवार को इस बात का गर्व था कि उनकी एमा एक कवि थी.

एक प्रकाशक के एडिटर इस बात से सहमत थे. अगले वर्ष उस प्रकाशक ने आम लोगों के लिए उस पुस्तक को प्रकाशित किया. एमा की कलम से कवितायें निकलती रहीं.







शीत ऋतु की एक शाम, एमा अपने माता-पिता के साथ एक भोज में गई. वहाँ उसके पिता उसे भोज में आये श्वेत बालों वाले एक व्यक्ति के पास ले गये और उनका परिचय कराया, “एमा, यह हैं मिस्टर राल्फ वाल्डो एमर्सन.”

प्रसिद्ध लेखक ने-वही जिनकी पुस्तक ने उसे अपने अंतर्मन की वाणी को सुनना सिखाया था- उसका अभिवादन किया. शीघ्र ही एमा उनसे खुल कर बातें करने लगी. आश्चर्य की बात थी कि वह बड़ी रूचि के साथ उसकी बातें सुन रहे थे, जबकि वह सिर्फ उन्नीस साल की एक लड़की थी. उसने उनको बताया कि उसकी कविताओं की एक पुस्तक छपी थी.

“मैं उसे पढ़ना चाहूँगा,” उन्होंने कहा.



एमा ने अपनी पुस्तक की प्रति मिस्टर एमर्सन को भेज दी. दो सप्ताह के बाद उसे उनका उत्तर मिला.

प्रिय मिस लज़ारस,

मिस्टर वार्ड के घर पर हुई हमारी बातचीत की मेरी स्मृतियाँ सुखद हैं. तुम्हारी पुस्तक और पत्र पढ़ कर तुम्हारे बारे में मेरी धारणा की पुष्टि हुई है.



एमा प्रसन्नता से खिल उठी. मिस्टर एमर्सन को उसकी कवितायें अच्छी लगी थीं. या...... सिर्फ यह उनकी उदारता थी?

उन्होंने एक भी आलोचनात्मक बात न कही थी. एमा चाहती थी कि वह अपनी बेबाक राय दें और उसकी रचनाओं की कमियाँ उसे बताएं. उसने पत्र लिखा:

मुझे बहुत प्रसन्नता होती अगर आपने मेरी कविताओं के कुछ भागों को चिह्नित किया होता.......जो आपको पसंद नहीं आये क्योंकि मैं अपनी रचनाओं को सुधारना चाहती हूँ.......जितना मेरे लिए ऐसा करना संभव है.

वह फिर प्रतीक्षा करने लगी. क्या मिस्टर एमर्सन उसे सिखलाना चाहेंगे? उनके अगले पत्र में उसे वही उत्तर मिला जिसकी उसे प्रतीक्षा थी.

मैं तुम्हारा अध्यापक बनना चाहूँगा. तुम्हें सारे सत्र में उपस्थित रहना पड़ेगा... बहुत पुस्तकें पढ़नी होंगी और बहुत लिखना होगा...



एमा की प्रसन्नता की सीमा नहीं थी.

जितनी पुस्तकें मिस्टर एमर्सन ने उसे पढ़ने के लिए कहीं, वह सब उसने पढ़ डालीं. उनके सुझावों को ध्यान से समझ कर वह अपनी रचनाओं को बार-बार लिखने लगी और शब्दों को काटती-छांटती रही. एक कविता और फिर दूसरी किसी पत्रिका में छपी. उसकी दूसरी पुस्तक प्रकाशित हुई. और फिर तीसरी. मिस्टर एमर्सन की युवा लेखिका बड़ी हो रही थी और प्रसिद्धि प्राप्त कर रही थी.

कविताओं के साथ-साथ एमा ने लेख लिखे, पुस्तकों की समीक्षा भी लिखी. वह म्यूज़ियम में आयोजित कार्यक्रमों में जाती, नाटक देखती, संगीत समारोहों में जाती. एक मित्र को उसने एक पत्र में लिखा, “मैं नहीं जानती.....कब मेरे अंदर लोगों, पुस्तकों, कला, संगीत के प्रति इतनी रूचि उत्पन्न हुई.....हर वह वस्तु जिसका आनंद लिया जा सकता है.”

देश की सबसे लोकप्रिय पत्रिका, सेंचुरी में उसकी रचनाएं लगातार छपने लगीं. उस पत्रिका के सम्पादक और उसकी पत्नी उसके सबसे प्रिय मित्र थे. उन्होंने उसकी भेंट एक राजनेता, विलियम एवर्ट्स, के साथ कराई जिसने उसे एक विरोध सभा में आने के लिए आमंत्रित किया. इस विरोध सभा ने एमा का जीवन ही बदल दिया. अब उसकी रचनाओं में एक नया उद्देश्य दिखाई देने लगा.







एक शाम एमा ने एक हॉल में प्रवेश किया. वहाँ कई लोग थे और सब अलग-अलग भाषाएं बोल रहे थे. वातावरण में तनाव था.

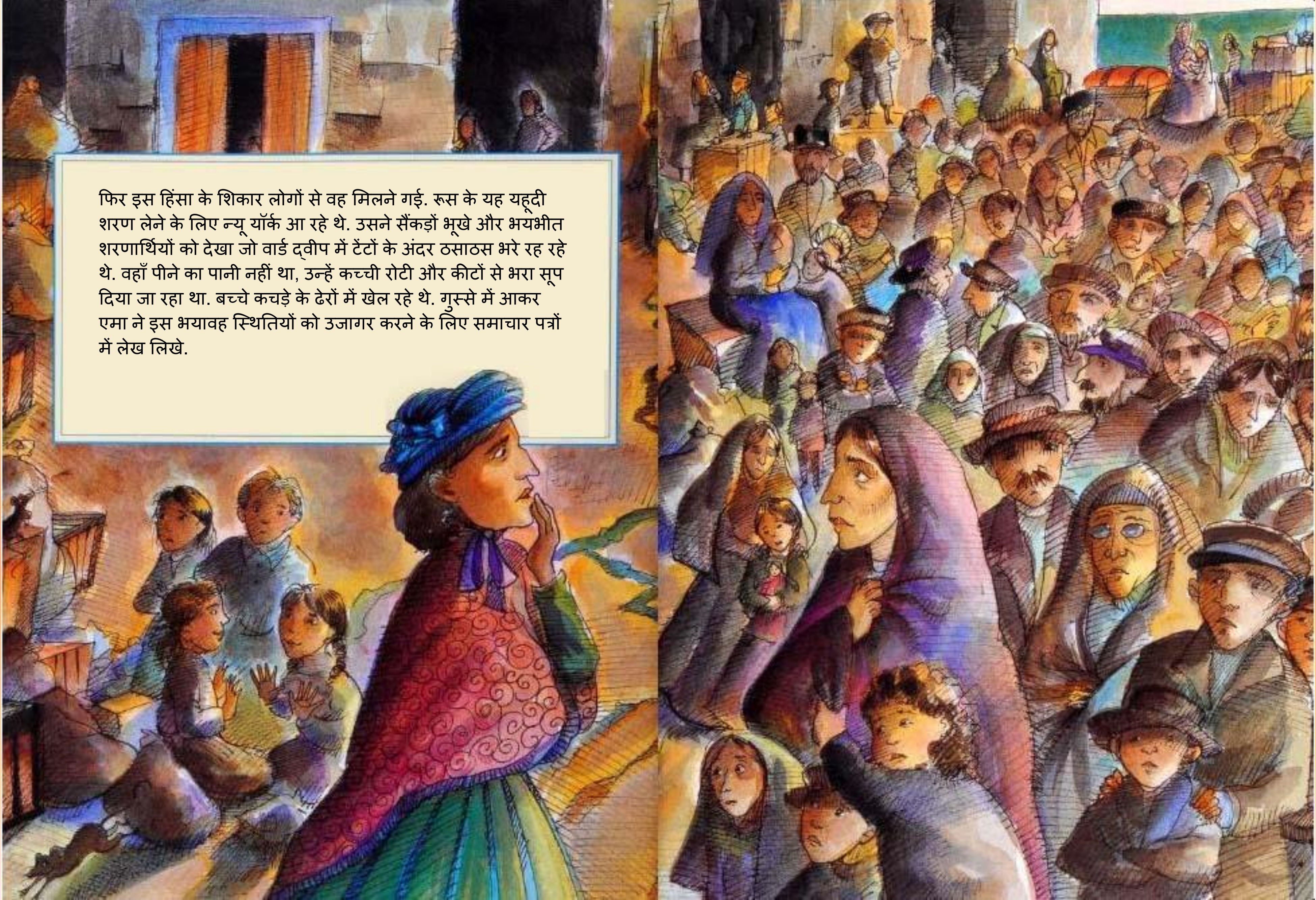
विलियम एवर्ट्स स्टेज पर आया. उसने घोषणा की कि रूस में यहूदियों के साथ भयंकर हिंसा हुई है. उसने बताया कि इस सामूहिक हत्याकांड के दौरान कई नगरों में यहूदी पुरुषों, महिलाओं और बच्चों को मार डाला गया. उनके घरों को जला दिया गया और उनकी संपत्ति लूट ली गई. यह सब सुन कर एमा को बहुत सदमा लगा. वह तो यह समझे बैठी थी कि यहूदियों के प्रति घृणा और हिंसा बीते हुए युग की बात थी, अब उसे लगा कि अपने लोगों की रक्षा के लिए उसे खड़ा होना होगा.

इस हत्याकांड के विरोध में उसने समाचार पत्रों में लेख लिखे.





फिर इस हिंसा के शिकार लोगों से वह मिलने गई. रूस के यह यहूदी शरण लेने के लिए न्यू यॉर्क आ रहे थे. उसने सैंकड़ों भूखे और भयभीत शरणार्थियों को देखा जो वार्ड द्वीप में टेंटों के अंदर ठसाठस भरे रह रहे थे. वहाँ पीने का पानी नहीं था, उन्हें कच्ची रोटी और कीटों से भरा सूप दिया जा रहा था. बच्चे कचड़े के ढेरों में खेल रहे थे. गुस्से में आकर एमा ने इस भयावह स्थितियों को उजागर करने के लिए समाचार पत्रों में लेख लिखे.



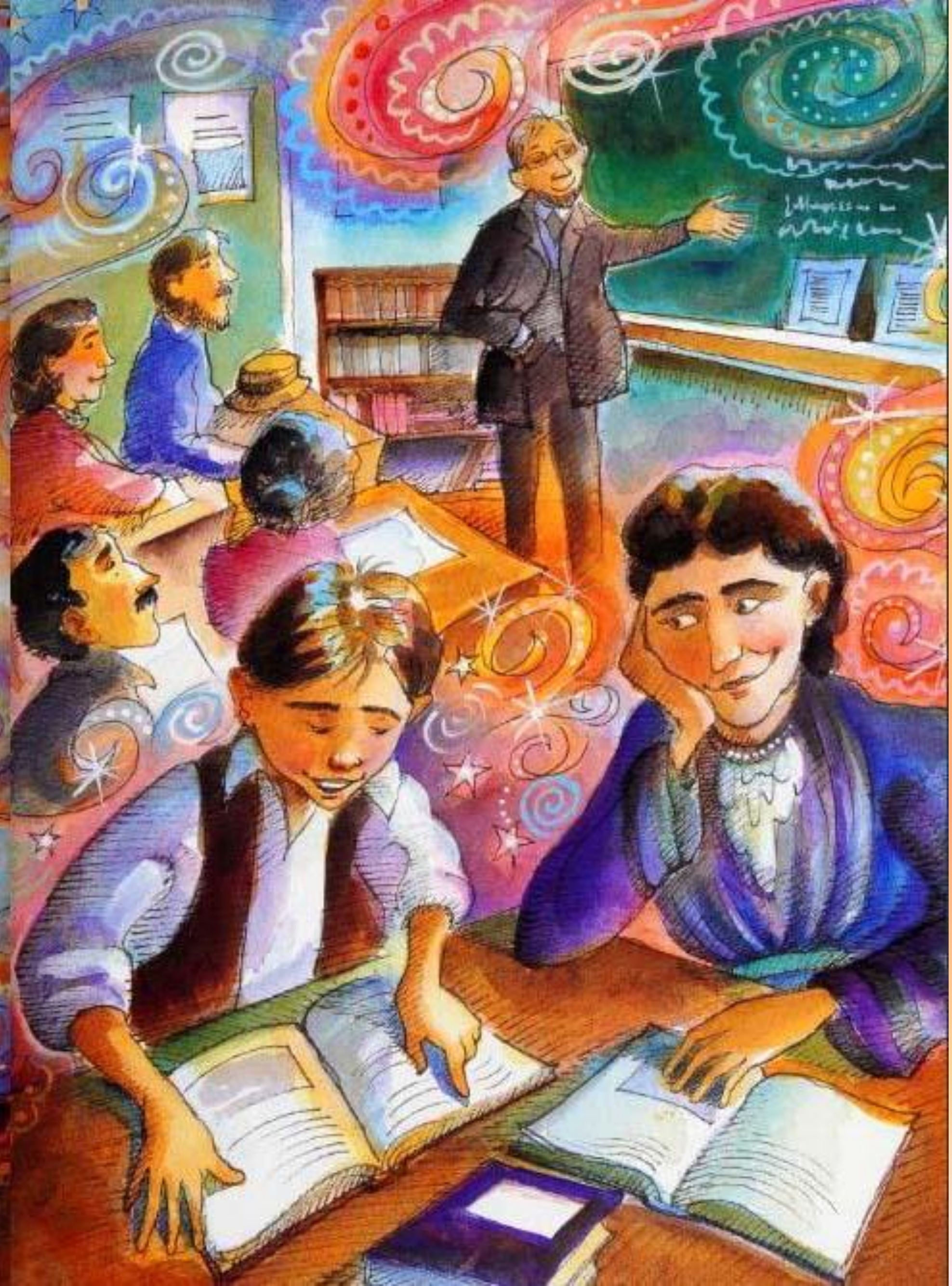
उन लोगों के लिए वह खाना और कपड़े ले कर आई. इंग्लिश सिखाने के लिए उसने कक्षाएं चलाईं. शरणार्थियों की सहायता करने के लिए लोगों को प्रेरित किया, सरकारी अफसरों से मिली. शरणार्थियों को कोई हुनर सिखाने के लिए स्कूल खुलवाये.

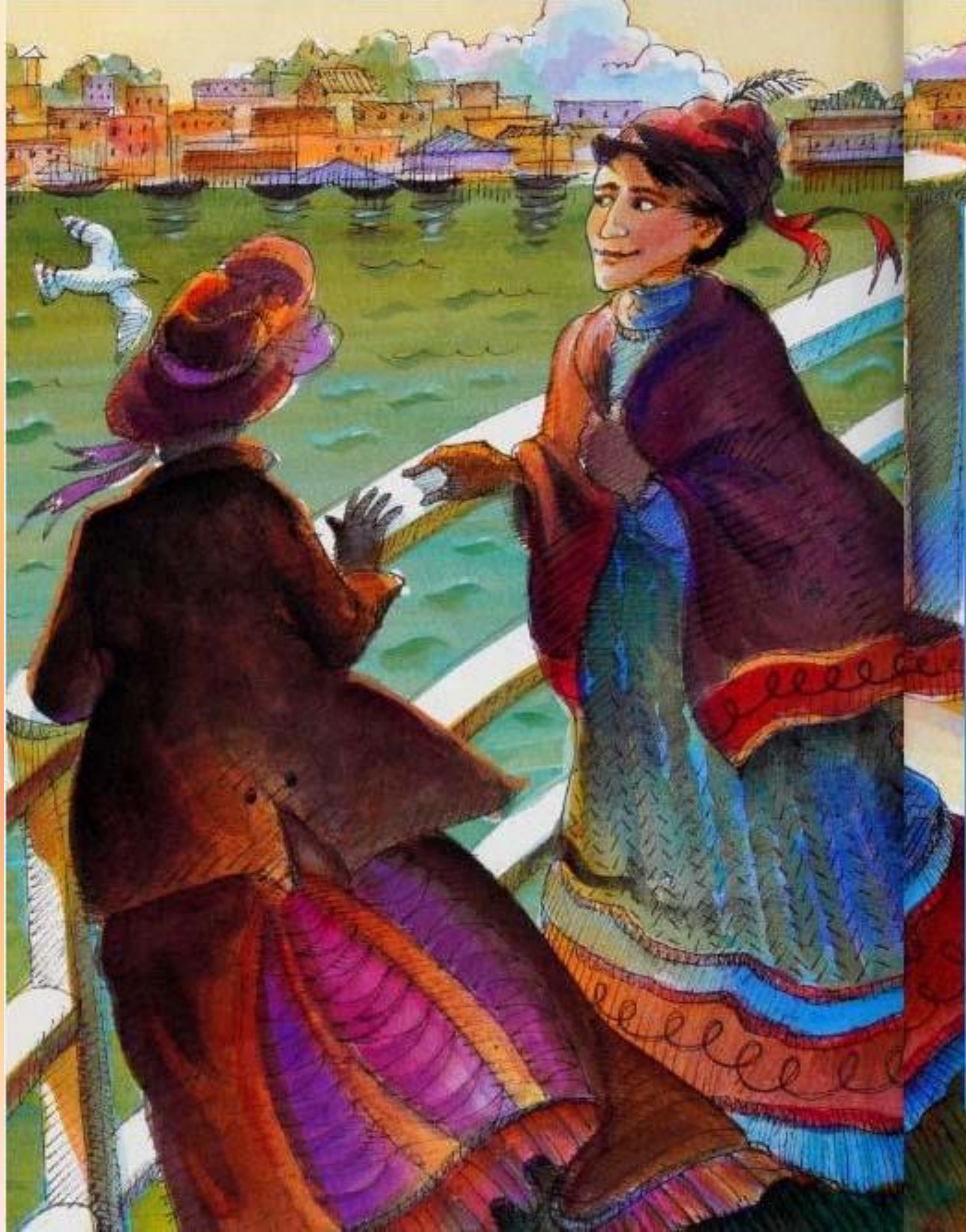
लेकिन सब लोगों ने शरणार्थियों का स्वागत न किया. कुछ लोग बढ़ते अपराध, बीमारी और गरीबी के लिए इन्हें दोषी मानते थे, शरणार्थियों को रोकने के लिए लोगों ने कानून बनाने की मांग की. लोगों की सोच को बदलने के लिए एमा ने बहुत प्रयास किया.

अब उसकी लेखनी अन्याय के प्रति रोष, अपनी परम्परा और संस्कृति में गर्व और नये समाज की उम्मीद से प्रेरित थी. बड़ी तेज़ गति से नई कवितायें, नाटक और लेख लिख रही थी. उसने लिखा:

“जब तक सब स्वतंत्र नहीं, कोई भी स्वतंत्र नहीं”

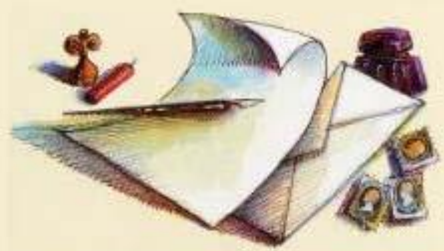






एमा ने तय किया कि वह इंग्लैंड जाकर वहाँ के यहूदी नेताओं से मिलकर रूस के यहूदियों की स्थिति के विषय में चर्चा करेगी. बचपन से उसने इंग्लैंड, फ्रांस और इटली जाकर उन जगहों के देखने का सपना देखा था जिनके विषय में उसने पुस्तकों में पढ़ा था. अपनी बहन जोसफिन के साथ वह यूरोप की यात्रा पर चल दी. दोनों इंग्लैंड और इटली में कई जगह घूमीं. जिन लोगों से मिलीं और जो जगहें उन्होंने देखीं उनके बारे में पत्रों द्वारा अपने घर वालों को बताया.

वापसी यात्रा के समय एमा का जहाज़ न्यू यॉर्क बंदरगाह पर आया. वह उसी रास्ते से लौट रही थी जिस रास्ते से यहूदी शरणार्थी अपना सब कुछ साथ लेकर आये थे, उनका भविष्य अनिश्चित था और उन्हें अपने नए देश की भाषा भी न आती थी. वह कितनी भाग्यशाली थी कि उसका स्वागत करने के लिए उसके संबंधी और मित्र आये हुए थे, जिन्हें वह अपनी विदेश यात्रा की रोचक और दिलचस्प कहानियाँ सुनाने को आतुर थी. उसे लगा कि यह महत्वपूर्ण था कि, समानता के आदर्शों का सम्मान करते हुए, उसका देश सताये हुए लोगों को शरण देता रहे.





पत्रों का ढेर एमा की प्रतीक्षा कर रहा था. एक पत्र मिस्टर एवर्ट्स का था. उसने लिखा था कि फ्रांस ने एक विशाल मूर्ति जिसका नाम लिबर्टी था, यूनाइटेड स्टेट्स भेजी थी. लेकिन इस मूर्ति को लगाने के लिए पेडस्टल की ज़रूरत थी जो महंगा था. इसके लिए एक पेडस्टल फंड कमेटी बनाई गई थी. पैसे इकट्ठे करने के लिए कमेटी नीलामी करने जा रही थी. क्या वह इस मूर्ति पर कोई कविता लिख कर दान कर सकती थी?

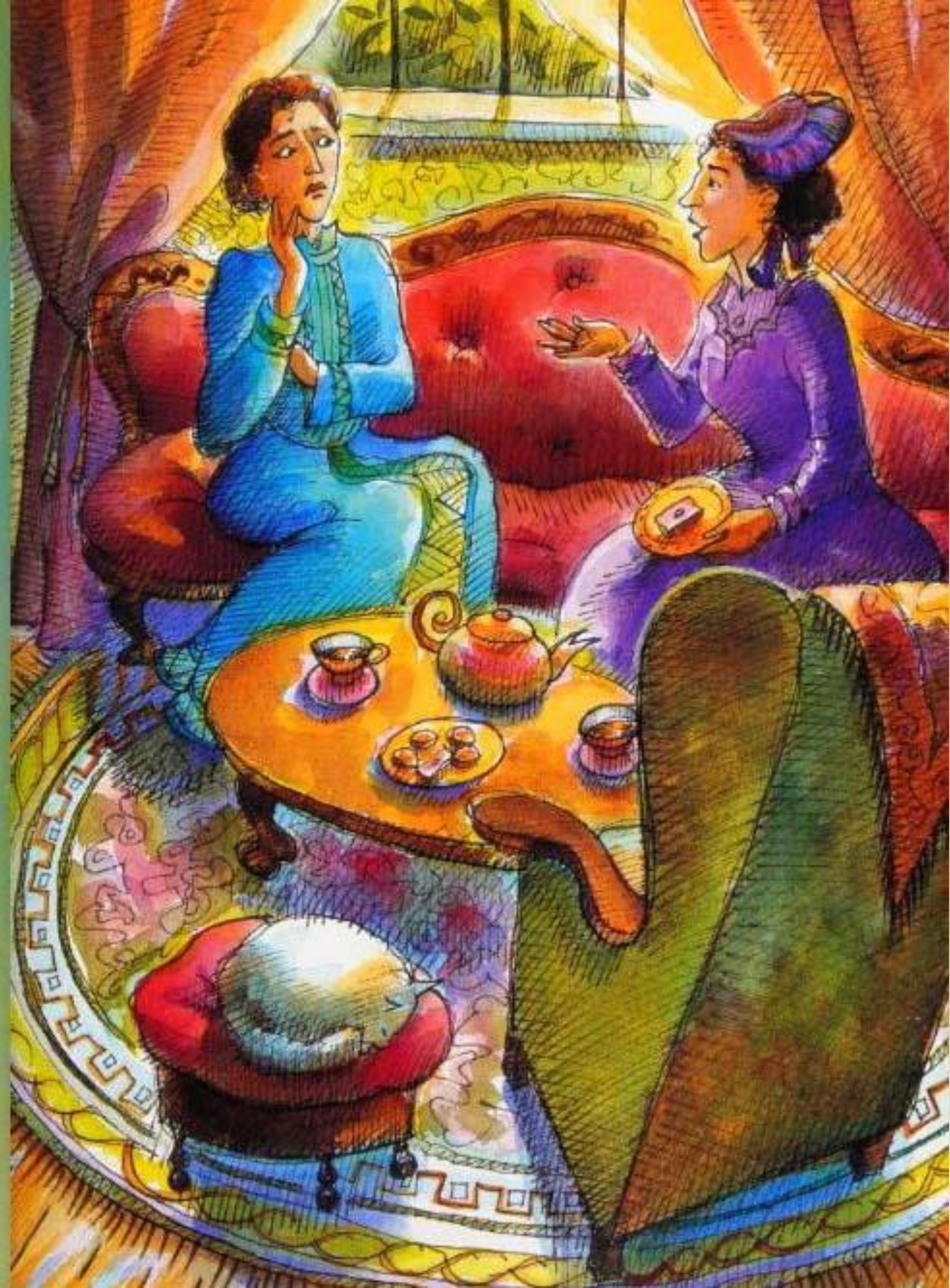
“मुझे खेद है पर मैं इस प्रकार कुछ नहीं लिख सकती,” उसने उत्तर दिया. “कविता हृदय से आनी चाहिए.”

एवर्ट्स निराश न हुआ. उसने कमेटी के एक सदस्य, कॉन्स्टेंस कैरी हैरिसन, को उसके पास भेजा. हैरिसन ने एमा से अनुनय की.

एमा ने कहा, “ऐसे लिखी कविता निर्जीव होगी.”

हैरिसन ने ज़ोर डाला, “सोचो कि वह देवी वहाँ बन्दरगाह में पेडस्टल पर खड़ी अपनी मशाल से तुम्हारे रुसी शरणार्थियों को प्रकाश दिखा रही है.”

एमा ने आह भर कर कहा, “नीलामी अगले सप्ताह है. मैं चाह कर भी इतनी जल्दी कविता नहीं लिख सकती.”





लेकिन हैरिसन की बातों ने उसे उत्तेजित कर दिया था. उसने कल्पना की कि शरणार्थी न्यू यॉर्क बन्दरगाह पर पहली बार उतर रहे हैं और उनकी दृष्टि उस मूर्ति पर पड़ रही है जिसका नाम लिबर्टी है. अख़बारों में इस मूर्ति की तुलना प्रसिद्ध यूनानी मूर्ति, कॉलॉसस, से की जा रही थी जो एक पुरुष की, शत्रुओं को भयभीत करने वाली, मूर्ति थी. लिबर्टी भी विशाल और शक्तिशाली थी, लेकिन कॉलॉसस के विपरीत यह, मशाल उठाये हुए, उन लोगों का पथ प्रकाशित करती हुई दिखती थी जो पहली बार आ रहे थे.

एमा लिखने बैठ. उसने शीर्षक लिखा, 'नया कॉलॉसस'

फिर वह अपने अंतर्मन की वाणी सुनने लगी. शब्द उपजने लगे, आकृतियाँ मन के पटल पर उभरने लगीं.

उसने लिखा:

उस विशाल यूनानी देव के समान नहीं

धरती को जीत लेने के लिए फैली हैं जिसकी भुजाएं

हमारे इस समुद्री तट पर खड़ी है

शक्तिशाली महिला पकड़े हाथ में एक मशाल

जिस में कैद हैं बिजलियाँ, जिसका नाम है........

एमा रुक गई. उसके लिए कौन सा नाम उचित होगा?



एमा ने उन शरणार्थियों के बारे में सोचा जिन से वह वार्ड द्वीप पर मिली थी. उन्होंने कितने दुःख और कष्ट झेले थे. उन्हें आश्रय और सांत्वना की आवश्यकता था. अगर मूर्ति का कोई नाम होना चाहिए तो वह नाम होगा......

निर्वासितों की माँ. उसकी मशाल करती है

पथ प्रकाशित उसकी कोमल आँखें देख रही हैं

दो नगरों को जोड़ती बंदरगाह को.

अगर यह मूर्ति संसार से कुछ कहती तो क्या कहती? एमा ने मन की बात सुनी. उसने लिखा:

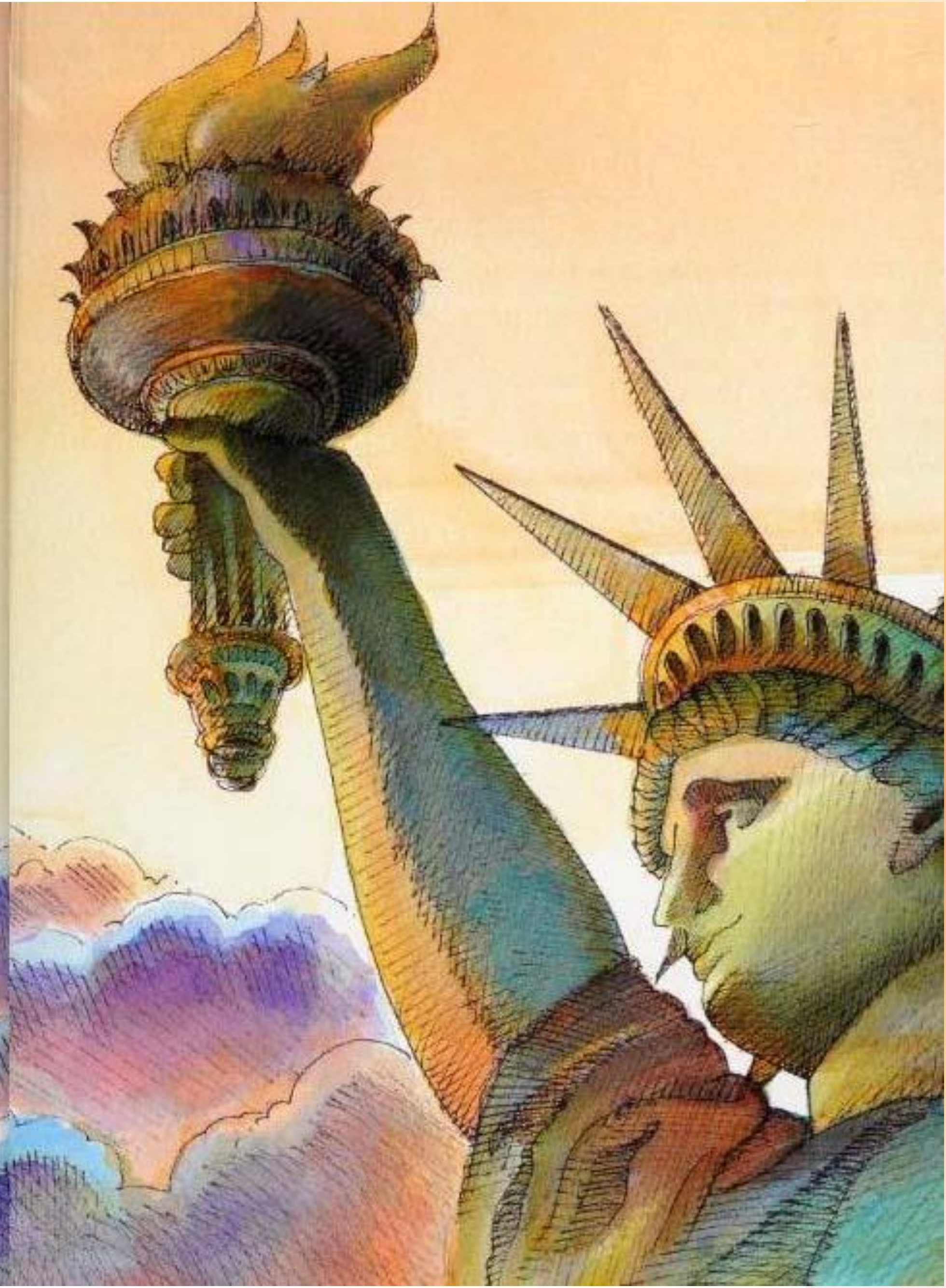
"प्राचीन देश अपने वैभवशाली लोगों को रखो अपने पास," उसके मूक होंठ

कहते, "मुझे दे दो अपने गरीब असहाय, वह जो तड़प रहे हैं स्वतंत्रता के लिए.

तुम्हारे धरती पर हैं जो व्यर्थ उन निर्बल, बेघर लोगों को भेज दो मेरे पास

इस सुनहरे गेट पर मैं कर रही हूँ प्रतीक्षा लिए हाथ में यह मशाल."

एमा ने अपनी कलम रख दी. उसने कविता लिख ली थी. शरणार्थियों के लिए उसके मन में जो आशाएं और सपने थे उन्हें उसने कविता में उंडेल दिया था. शायद इससे किसी का कल्याण हो जाए.



३ दिसम्बर १८८३ को जो नीलामी हुई उसमें सिर्फ एक ही कविता पढ़ी गई और वह थी नया कॉलॉसस. कवि जेम्स रुस्सेल लोवेल ने एमा को लिखा, “मुझे तुम्हारी कविता पसंद आई. मूर्ति से अधिक तुम्हारी कविता अच्छी लगी.....तुम्हारी कविता ने इसे एक उद्‌देश्य दिया, क्योंकि पेडस्टल के समान ही इसे उद्‌देश्य की भी आवश्यकता थी.”

एमा इस कविता का महत्व कभी न जान पाई. १८८७ में उसकी मृत्यु हो गई. १९०३ में इस कविता को एक फलक पर अंकित कर मूर्ति के पेडस्टल पर लगा दिया गया.

समय बीतने के साथ मूर्ति और कविता का संबंध स्थाई हो गया. मूर्ति अभी भी शरणार्थियों को आशा का प्रकाश दिखाती है.

एमा की मृत्यु पर संसार भर से लोगों ने शोक सन्देश भेजे थे.